delhi_Page 1 and 2 14/04/2015 09:37 Page 2

जो पारदर्शी, वही दर्शनीय

साधना के मार्ग में चलते-चलते कभी मूर्च्छा जैसी अवस्था हो जाती है। इसे समझ लेना ज़रूरी होगा। मूर्च्छा का अर्थ हमें खयाल में नहीं है। मूर्च्छा का अर्थ जागृति से उलटा नहीं है, मूर्च्छा का अर्थ है जागृति का और कहीं उपस्थित होना। यह खयाल में आ जाए तो कठिनाई नहीं रह जाएगी। हमें ऐसा लगता है कि अगर स्वभाव जागृति है तो फिर मूर्च्छा कहां है?

समझ लें, एक टॉर्च हमारे पास है, जिसका स्वभाव प्रकाश है, और टॉर्च जल रही है। फिर हम कहते हैं, जब टॉर्च जल रही है और स्वभाव टॉर्च का प्रकाश है, फिर अंधेरा कहां है? लेकिन टॉर्च का एक फोकस है और जिस बिन्दु पर पड़ता है, वहां तो प्रकाश है, शेष सब जगह अंधेरा हो जाता है। और यह भी हो सकता है कि टॉर्च खुद अंधेरे में हो, इसमें कुछ विरोध नहीं है। टॉर्च का फोकस बाहर की तरफ पड़ रहा है, यद्यपि टॉर्च का स्वभाव प्रकाश है, लेकिन टॉर्च खुद अंधेरे में खड़ी है।

- ब्र. कु. गंगाधर

हमारा स्वभाव तो जागरण है, लेकिन हमारी जागृति बाहर की तरफ फैली हुई है। एक उदाहरण द्वारा इसे समझते हैं – एक आदमी सड़क पर चल रहा है, चारो तरफ देखता है, दुकानें दिखाई पड़ रही हैं, लोग दिखाई पड़ रहे हैं। नहीं तो चलेगा कैसे अगर सोया हुआ हो? सब दिखाई पड़ रहा है, सिर्फ एक आदमी को छोड़कर, जो वह स्वयं है। सब तरफ जागृति फैली हुई है, सब दिखाई पड़ रहा है– सड़क, दुकान, मकान, तांगा, कार, रिक्शा– सब; सिर्फ एक बिंदु भर दिखाई नहीं पड़ रहा, वह जो स्वयं है।

इसका मतलब यह हुआ कि जागृति दो तरह से हो सकती है: बहिर्मुखी और अंतर्मुखी। अगर बहिर्मुखी जागृति होगी तो अंतर्मुखता अंधकारपूर्ण हो जाएगी। वहां मूर्च्छा हो जाएगी। मूर्च्छा का कुल मतलब इतना है कि प्रकाश की धारा उस तरफ नहीं बह रही है। अगर जागृति अंतर्मुखी होगी तो बाहर की तरफ मूर्च्छा जाएगी। साधारणत: जागृति के ये दो ही रूप हो सकते हैं, अंतर्मुखता और बहिर्मुखता। अगर कोई बहिर्मुखी है तो अंतर्मुखता में बाधा पड़ेगी, अगर कोई अंतर्मुखी है तो बहिर्मुखता में बाधा पड़ेगी।

लेकिन अंतर्मुखता का अगर और विकास हो तो एक तीसरी स्थिति भी जागृति की उपलब्ध होती है, जहां अंतर और बाह्य मिट जाता है, जहां सिर्फ प्रकाश रह जाता है। वह पूर्ण जागृत, जहां बाहर और भीतर का भेद भी मिट जाता है। लेकिन बहिर्मुखता से कभी कोई इस तीसरी स्थिति में नहीं पहुंच सकता है।

पहली स्थिति है बहिर्मुखता, दूसरी स्थिति है अंतर्मुखता, तीसरी स्थिति है ट्रांसेंडेंस। तीसरी स्थिति है दोनों के पार हो जाना। और इस पार हो जाने का जो बिंदु है, वह अंतर्मुखता है। इस पार हो जाने का बिंदु बहिर्मुखता नहीं है। क्योंकि जब हम बाहर हैं, तब तो हम अपने पर भी नहीं हैं। तो अपने से और ऊपर जाने की तो कोई संभावना नहीं है। बाहर से लौट आना है अपने पर, और फिर अपने से भी ऊपर चले जाना है। उस स्थिति में बाहर-भीतर सब प्रकाशित हो जाते हैं।

मूर्च्छा का अर्थ अभी जिसे हम समझ लें, वह इतना ही है कि हम बाहर हैं। बाहर हैं का मतलब हमारा अटेंशन, हमारा ध्यान बाहर है। और जहां हमारा ध्यान है, वहां जागृति है; और जहां हमारा ध्यान नहीं है, वहां मूर्च्छा है।

समझो के तुम भागे चले जा रहे हो, मकान में आग लग गई है, पैर में कांटा गड़ गया है, लेकिन पता नहीं चलता कि पैर में कांटा गड़ा है। मकान में लगी है आग तो पैर में गड़े कांटे का पता कैसे चले? सारा ध्यान आग लगे हुए मकान पर अटक गया है। पैर तक जाने के लिए ध्यान की एक छोटी सी किरण भी नहीं है, जो शरीर से पैर तक पहुंच जाए यात्रा करके और पता लगा ले कि कांटा गड़ा हुआ है।

फिर मकान की आग बुझ गई है, फिर सब ठीक हो गया, और अचानक पैर का कांटा दुखने लगा है! इतनी देर तक पैर के कांटे का कोई पता नहीं था, क्योंकि ध्यान वहां नहीं था, ध्यान कहीं और था। जहां हमारा ध्यान है, वहां हम जागृत थे। जहां हमारा ध्यान नहीं था, वहां हम मूर्च्छित थे।

कई बार उलटी घटनाएं भी घटी हैं। एक आदमी दो या तीन वर्षों से पैरालिसिस से बीमार एक मकान में पड़ा हुआ था। हिल-डुल भी नहीं सकता, उठ भी नहीं सकता। चिकित्सक परेशान थे, क्योंकि वस्तुत: उस आदमी को पैरालिसिस नहीं थी, लकवा नहीं था। कोई शारीरिक कारण न थे। किसी न किसी तरह उसको मानसिक लकवा - शेष पेज 11 पर

निश्चय बुद्धि से होगा, नशा कर्म से होगा

अभी जी चाहता है कि सब जल्दी-जल्दी सम्पूर्ण बन हम सतयुग में चलें। बाबा कहता है अभी थोड़ा टाइम चाहिए, सतयुग में राज्य करने वाले तो तैयार हो जाएं ना!

मैंने साकार बाबा को अच्छी तरह से देखा है, बहुत बच्चों के लिए प्यार है, अव्यक्त हो करके भी और ज़्यादा प्यार करने लगा है, जिससे बच्चों को मिसिंग महसूस न हो, साक्षी हो करके देख रही हूँ। साकार में किया वो अनुभव है, पर अव्यक्त हो करके अव्यक्त रूप से बहुत प्यार कर रहा है। जब साकार में थे तो खाने और सोने में भी टाइम देना पड़ता था, अभी तो फ्री हो करके सेवा कर रहे हैं। भले बाबा को कभी सोया हुआ देखा नहीं, सदा ही जागती ज्योत देखा। फिर भी अव्यक्त हो करके सारा समय बच्चों की सेवा में है। बाबा शरीर में बैठे भी हैं, लोन पर भी दिया है, तो शिवबाबा यूज़ कर रहा है, इस तन द्वारा हम सबको समझा रहा है, माता-पिता के रूप में यह बाप, यह दादा दोनों मिल करके। बाबा ने कहा सिर्फ लोन से राजाई नहीं मिलेगी, राजाई के लिए याद में रहने का, कर्मातीत बनने का, अव्यक्त बनने का पुरुषार्थ करना है। हम सारी दुनिया से, शरीर से भी न्यारे बन करके बाबा के बन गये हैं। बाबा ने ब्रह्मा द्वारा हमें क्या से क्या बना दिया है। सतयुग में राजाई मिलेगी वह तो बड़ी बात नहीं है, वो तो फिक्स हुई पड़ी है, परन्तु अभी राजाई का नशा है! राजयोग सीख रहे हैं, भगवान सिखा रहा है राजाओं का राजा बनाने के लिए। गीता में यह लिखा हुआ है, कृष्ण नहीं सुना रहा है, निराकार परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सुना रहा है। दिलाराम बाबा दिल में बैठके, मन को शान्त बुद्धि को अच्छा सोचना सिखा रहा है। बाबा जब अच्छी गुह्य प्वाइंट सुनाता है, तो बाबा फौरन कहता है यह बुद्धि में धारण करनी चाहिए। यह नहीं कहेगा मन में धारण करना चाहिए, बुद्धि में धारण करना चाहिए। तो सारा काम है बुद्धि का। बाबा ने अपनी दृष्टि से, अच्छे वायुमण्डल से मन को शान्त कर दिया है। हरेक को आत्मा का ज्ञान मिला है और आत्मा परमात्मा की संतान है, यह भी समझ आई है पर नशा और निश्चय, निश्चय होगा तो नशा चढ़ेगा। निश्चय बुद्धि से होगा, नशा कर्म से होगा, प्रैक्टिकल लाइफ से होगा। बाबा को इतना नशा रहता था, बात मत पूछो, पार्ट बेगरी है, डायरेक्शन ऐसे देगा...कहेगा नारायण बनने वाला हूँ ना! वो संस्कार काम करते हैं। मनमनाभव तभी हो सकेंगे जब बुद्धि में ज्ञान की धारणा होगी।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मन कर्मेन्द्रियों के वश होने के आदती हो गया है, तो विकारी कर्मेन्द्रियाँ हो गयीं, अभी उन्हीं कर्मेन्द्रियों के द्वारा हमको कर्म में आ करके पवित्रता के योगबल से निर्विकारी बनना है। विशश से वाइसलेस, कहाँ विशश कहाँ वाइसलेस? अभी हम पूज्य बन रहे हैं, जब सतयुग में होंगे तब तो पूजा नहीं होगी, पूजा हमारी द्वापर से शुरु होगी, पर पूज्य अभी बन रहे हैं। हम पुजारी भल थे परन्तु इच्छाओं से पूजा नहीं करते थे, यह चाहिए, चाहिए... इसलिए पूजा नहीं करते थे, परन्तु थोड़ा विकारी होने कारण ऐसे न लायक थे। अभी लायक बन रहे हैं। महिमा योग्य, गायन योग्य, पूजन योग्य बन रहे हैं। जो बाप के गुण हैं वह मेरी लाइफ में आ जायें। तुम्हें पाके हमने जहान पा लिया... यह हम नहीं गा रहे हैं, दूसरे हमारे लिए गा रहे हैं। बाबा ने धरती और आसमान से पार जाने का रास्ता दिखा दिया है, कितनी बाबा की मेहरबानी है। कितना पाया है, बिना कोई खर्चे के।

बाबा हमें ऐसे मिला है जैसे हमारा ही था

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

हम सभी एक दूसरे को देख खुश होते हैं, क्यों? क्योंकि हमको बाबा ने सारे विश्व से चाहे इण्डिया हो या कोई भी स्थान, सब जगह से चुनकर सकीलधा बनाया है। कितना सुंदर हॉल बनाकर दिया है, जिसमें मेरे बच्चे बैठें और उन्हें ज़रा भी दु:ख न हो। इतना ख्याल रखता है बाबा बच्चों का। बाबा को सभी बच्चों से विशेष प्यार है। बाबा को बहुत अच्छा लगता है कि इन्होंने हिम्मत से खुद को बनाया है। बाबा का बच्चों की एक-एक चीज़ पर अटेन्शन जाता है। हमने साकार बाबा को देखा, बच्चों की खुशी के लिए अपनी जान देने को भी तैयार रहता था, बस मेरे बच्चों को दु:ख न हो। एक-एक बच्चे से बाबा को बहुत प्यार है। हम सभी भी बाबा के प्यार के हकदार हैं। जितना बाबा का प्यार स्वीकार करते रहेंगे उतना ही अपने को भाग्यवान समझेंगे। बाबा ने हमें अपना बनाया, सुख शान्ति तो है। मैं कहती हूँ बाबा ने बच्चों के लिए क्या-क्या बनाकर दिया है जिससे बच्चों को दु:ख न हो। अगर कोई बीमार भी होता था, तो बाबा कहता था बच्चे की बीमारी मुझे लग जाये बच्चे को नहीं। क्या हमें भी बाबा से इतना प्यार है। प्यार में तो क्या नहीं कुर्बान किया जा सकता। स्थूल वस्तु नहीं, सूक्ष्म संस्कारों को बाबा पर कुर्बान करना क्या बड़ी बात है। बाबा हमारा कितना ध्यान रखते हैं यह देख बहुत खुशी होती है। दिल से निकलता है वाह बाबा वाह! बाबा ने बच्चों के लिए कितने सुख के साधन बनाये हैं। सुबह से लेकर रात तक जो भी दिनचर्या बीतती है उसमें कितने अथाह सुख के साधन हैं। हम जब यहाँ आते हैं तो आपका जीवन देख हमें भी हमारा बचपन याद आ जाता है। बाबा ने हमें भी बहुत सुख के साधन दिये थे। फिर सेवा में लग गये, सेवा में तो अपने-अपने ढंग के स्थान होते हैं लेकिन जब तक साकार बाबा के साथ थे तो बहुत सुख के साधन मिले, जैसे अभी आपको मिले हैं। आपके भाग्य को देख खुशी होती है-वाह मेरे भाई बहनें वाह! बाबा ने प्यार से आपके लिए यह स्थान बनवाया है। भले दूसरों के सहयोग से बना है लेकिन बनवाने वाला कौन? बाबा। कदम-कदम पर वाह बाबा वाह का अनुभव करते रहो। वैसे तो साधन सेन्टर्स पर भी होते हैं पर यहाँ संगठन में हर प्रकार के साधन होना कम बात नहीं। आपको जो यहाँ साधनों के साथ ज्ञान और योग की पालना मिल रही है उसको स्मृति में रख खुशी में झूमना चाहिए। जैसी बाबा अभी आपकी पालना कर रहा है, ऐसी पालना सतयुग में राजकुमार और राजकुमारियों की भी नहीं होती। इतना नशा है? आप जैसे भाग्यवान और कोई नहीं हैं क्योंकि सिकीलधे हो ना। एक-एक को बाबा ने चुनकर इकट्ठा किया है, किसी को ईस्ट से और किसी को वेस्ट से, अभी सभी मिलकर एक हो गए हैं। हमें तो बाबा ने छोटेपन में इतनी अच्छी पालना दी, लेकिन आपको तन, मन और धन तीनों सुख के साधन दिये हैं। संसार में जो रॉयल लोग होते हैं उन्हें सिर्फ तन का सुख होगा, मन का नहीं। हमें तो सारे सुख हैं। चेक करो कि हम खुशी में रहते हैं? क्योंकि संगठन में बातें तो आयेंगी हमें भी अनुभव है। संगठन में एक दो के गुण देख उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते जाओ, बातों में नहीं जाओ। संगठन का भी फायदा उठाओ। देखो, आज संगठन में कितनी रॉयल रीति से बैठे हो, सतयुग इसके आगे कुछ नहीं। जो अन्तर का सुख यहाँ है वह सतयुग में भी नहीं होगा। बाहर कुछ भी होता रहे लेकिन बाबा हमें हर हाल में खुश रखता है। ऐसा बाबा फिर कल्प के बाद ही मिलेगा। बाबा ने हमें सैलवेशन के साथ जो दिल की खुशी दी है वह कहीं नहीं मिलती। आपका जीवन साधारण नहीं, भले भाव-स्वभाव का टकराव तो संगठन में होता ही है लेकिन बाबा का प्यार सब भुला देता है। ज्ञान ताकत देता है। सदा दिल से यही निकलता रहे वाह मेरा बाबा वाह! दुनिया में क्या लगा पड़ा है और बाबा ने हमारा भाग्य कितना श्रेष्ठ बना दिया है। खुशी होती है ना? यहाँ खुशी के बिना और है ही क्या, अगर थोड़ा बहुत कुछ होता भी है, वह हिसाब-किताब संगठन में चुक्तू हो रहा है। बाबा हमें रोज़ खुशी का खज़ाना देता है, कमाल है बाबा की। धार्मिक स्थानों पर दूसरी बात होती है लेकिन यहाँ परिवार और स्कूल दोनों हैं। जब क्लास में होते हैं तो स्कूल लगता है और जब एक साथ खाते-पीते हैं तो घर लगता है। यहाँ दोनों भासना आती है। भगवान सहज बाप के रूप में मिल रहा है यह कम बात नहीं है। वह हमें ऐसे मिला है जैसे हमारा ही था। बाबा ने हमें संगठन में चलने की शिक्षा दी है। संगठन में थोड़ा-बहुत चलता है लेकिन संगठन अच्छा है। यहाँ जितना ज्ञान योग और धारणाओं पर ध्यान खिंचवाया जाता है और कहीं शायद इतना नहीं होता। सदा खुशनुमा रहना है, बातों से डरना नहीं है। संगठन में बातें तो आयेंगी लेकिन हमारा ध्यान बाबा और पढ़ाई पर हो तो यह बातें कुछ भी नहीं लगेंगी। संस्कारों के मिलन में ऐसा होता है। हमने तो बाबा से छोटेपन में आप जैसी पालना पाई है लेकिन आप तो बड़े ऐसी पालना के पात्र हो।